International Journal of Advanced Research in Engineering Technology & Science
ISSN: 2349-2819
Impact Factor: 7.10
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal)
Email: editor@ijarets.org Volume-11 Issue-9 September-2024 www.ijarets.org

सल्तनतकाल में नारी की राजनीतिक भूमिका–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ० सुमन शर्मा
सहायक आचार्य (इतिहास)
विद्या संबल योजना
राजकीय महाविद्यालय, उच्चैन,
जिला–भरतपुर (राजस्थान)

लम्बे समय से अरब व भारत के मध्य व्यापारिक व वाणिज्यिक सम्बन्ध थे। मुहम्मद साहब की धार्मिक शिक्षाओं का प्रभाव अरब व भारत के व्यापार के साथ–साथ धार्मिक व राजनीतिक सम्बन्धों में परिवर्तन के रूप में भी दर्शित होता है। अरबवासियों के मन में साम्राज्य विजय एवं इस्लाम धर्म के प्रचार की लहरें उठने लगी फलस्वरूप अरब द्वारा भारत पर कई असफल आक्रमण किए गए। 712 ई० में मोहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध के राजा दाहिर पर आक्रमण किया, भीषण युद्ध में राजा दाहिर की मृत्यु हो गई। भयभीत सेना को साथ लेकर दाहिर की विधवा रानीबाई ने रावर के किले से वीरतापूर्वक युद्ध किया।[1] मैनाबाई[2] ने 15,000 सैनिकों की सहायता से अरबों को आगे बढ़ने से रोकने का प्रयास किया। असफल होने पर अरबों के व्यभिचार से बचने के लिए दाहिर की विधवा रानीबाई, मैनाबाई तथा अन्य हिन्दू स्त्रियों ने राजपूत प्रथा के अनुसार स्वयं को अग्नि में समर्पित कर दिया।[3] मोहम्मद बिन कासिम ने नगर में प्रविष्ठ होकर कुछ स्त्रियों व बच्चों को बन्दी बना लिया। इनमें से एक दाहिर की नातिन जयश्री भी थी[4] जिसे बगदाद भेज दिया गया। कासिम के भयंकर नरसंहार से बचने तथा अपने सतीत्व की रक्षा के लिए नगर की अधिकांश नारियों ने जौहर किया जिसमें दाहिर की अन्य पत्नी 'लादी' तथा दो कुमारी पुत्रियाँ 'सूर्यदेवी' एवं 'परिमल देवी' भी सम्मिलित थी।[5] अरोरा की जनता ने कासिम का प्रबल विरोध किया, कासिम ने मजबूर होकर एक स्त्री को लादी का प्रतिरूप बनाकर अलोर की जनता को छलने का प्रयास किया किन्तु यह सम्भव नहीं हो सका। दुर्भाग्यवश दाहिर की सेना के एक अरबी सैनिक ने नगर–द्वार खोल दिए और नगर कासिम के कब्जे में चला गया। मोहम्मद बिन कासिम के आदमी राजा दाहिर की पुत्रियों की खोज में लग गए। किसी अनजान व्यक्ति ने राजा दाहिर की पुत्रियाँ सूर्यदेवी तथा परिमल देवी कहकर दो अन्य बालाओं को कासिम के आदमियों को सौंप दिया। सूर्यदेवी नामी उस लड़की का वास्तविक नाम 'जानकी' था।[6] दोनों कन्याओं

को खलीफा के पास भेज दिया गया। वीर बालाओं ने अपनी बुद्धि व चतुराई से खलीफा द्वारा मीर कासिम को मरवा डाला।[7] सन् 714 ई० में कासिम की मृत्यु हो गई। मोहम्मद बिन कासिम द्वारा सिन्ध विजय भारत पर प्रथम मुस्लिम विदेशी आक्रमण माना जाता है। अरब अपने साम्राज्य विस्तार न कर सके। अरबों की विजय का भारत पर स्थायी प्रभाव नहीं पड़ा किन्तु लगभग 300 वर्षों बाद उनके विजय के कार्यों को तुर्कों ने पूरा किया।

सुबुक्तगीन[8] गजनी के शासक अलप्तगीन का गुलाम व दामाद था। सुबुक्तगीत की पंजाब के राजा जयपाल से लमघानात के पास भयंकर संघर्ष हुआ। जयपाल की पराजय के बाद सुबुक्तगीत ने लमघानात पर कब्जा कर लिया।[9] सुबुक्तगीन की मृत्यु के बाद उसका उत्तराधिकारी महमूद गजनी का शासक बना। महमूद की माँ जाबुल के शाह की पुत्री थी अतः महमूद को महमूद जाबुली कहा गया।[10] सन् 1000 ई० में महमूद ने भारत पर पहला आक्रमण किया।[11] जिसमें जयपाल को पराजित किया। महमूद ने सन् 1008 ई० में आनन्दपाल पर आक्रमण किया। उत्तरी भारत पर राजनीतिक संकट उत्पन्न हो गया। इस संकट में आर्थिक सहायता के लिए हिन्दू स्त्रियों ने आभूषण बेचे तथा गरीब स्त्रियों ने शारीरिक श्रम करके देश की सुरक्षा में योगदान दिया।[12] महमूद का भारत में अन्तिम आक्रमण जाटों के विरूद्ध 1027 ई० में था, इसके पश्चात् महमूद गजनी लौट गया।[13] सन् 1000 ई० –1027 ई० के मध्य महमूद द्वारा भारत पर सत्रह आक्रमण किये गये,[14] इसका वर्णन सर हेनरी इलियट की पुस्तक ''महमूद के सत्रह आक्रमण'' में किया है। 1030 ई० में महमूद का इन्तकाल हो गया। महमूद भारत में अपने साम्राज्य का विस्तार पंजाब तक ही कर सका परन्तु इस्लाम धर्म को स्थायित्व प्रदान करने में असफल रहा।

कालान्तर में गजनी साम्राज्य की शक्ति क्षीण हो गई तथा गौर साम्राज्य चरम पर था। गौर वंश के सुल्तान मुइजुद्दीन मुहम्मद साम, जो सुल्तान सिहाबुद्दीन गौरी के नाम से जाना जाता है।[15] गौरी ने लाहौर पर अधिकार कर लिया। 12वीं शताब्दी में उत्तरी भारत अनेक छोटे–छोटे राज्यों मुल्तान, सिन्ध, राजपूत, अन्हिलवाड़ के चालुक्य तथा अजमेर के चौहान में विभक्त था, इन राज्यों के शासक एक–दूसरे के कट्टर दुश्मन थे। प्रत्येक राज्य अपना–अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए दूसरे राज्यों से निरन्तर युद्ध करते रहे। इसी कारण वे उत्तर–पश्चिमी भारत में विदेशी आक्रमणकारियों के विरूद्ध संगठित न हो सके। तुर्कों ने इसका लाभ उठाकर पंजाब, मुल्तान व सिन्ध पर अपने पैर जमा लिये थे। गौरी का भारत पर पहला आक्रमण 1175 ई० मुल्तान पर था, जिसे जीतकर उसने उच्छ (उच) के भाटी (भट्टी) कबीले को तहस–नहस कर दिया।[16] 1178 ई० में मुहम्मद गौरी सेना लेकर सीधे चालुक्य राज्य की राजधानी पाटन (अन्हिलवाड़,

गुजरात) के लिए निकल गया। गौरी ने महारानी 'नाईकी देवी'[17] को संदेश भिजवाया कि वो इस्लाम की अधीनता स्वीकार कर ले परन्तु नाईकी देवी ने प्रस्ताव अस्वीकार कर युद्ध के लिए तुरन्त अपनी सेना तैयार की। नाईकी देवी ने माउण्ट आबू की पहाड़ियों के बीच कसाहर्दा नामक स्थान पर मुहम्मद गौरी की सेना पर धावा बोल दिया। इस युद्ध में महिला शासक ने गौरी को इतनी बुरी तरह से घायल किया था कि जमीन से उठने तक की शक्ति उसमें न थी। एक मुस्लिम सिपाही उसे उठाकर ले गया।[18] गौरी इतना भयभीत हो गया कि उसने आगामी वर्ष तक गुजरात पर आक्रमण करने का विचार नहीं किया।[19]

अब गौरी ने उत्तर भारत में विजय अभियान प्रारम्भ किया। गौरी ने क्रमशः पंजाब, बुलन्दशहर, मेरठ, दिल्ली, अजमेर, कन्नौज, ग्वालियर, बुन्देलखण्ड, बिहार व बंगाल की विजय कर उत्तर भारत अपना कब्जा कर लिया।[20]

सल्तनतकाल

सुल्तान मुइजुद्दीन मोहम्मद बिन साम का कोई उत्तराधिकारी नहीं था लेकिन कुतुबुद्दीन ऐबक गौरी का अतिप्रिय गुलाम था। कुतुबुद्दीन ऐबक की वीरता को ध्यान में रखते हुए तुर्क अमीर व सेनानायकों तथा गौर के शासक ने उसे हिन्दुस्तान के सुल्तान के रूप में चुना। 1206 ई० में हिन्दुस्तान में उसने लाहौर में एक शासक वंश की नींव डाली जो दास वंश/गुलाम वंश के नाम से विख्यात हुआ। हिन्दुस्तान में उसने अनेक प्रदेशों झांसी, दिल्ली, रणथम्भौर तथा कोल को हस्तगत किया। उसने वैवाहिक सम्बन्धों के द्वारा अपनी राजनीतिक स्थिति को मजबूत किया। उसने ताजुद्दीन याल्दोज की पुत्री से विवाह किया।[21] सुल्तान कुतुबुद्दीन की तीन पुत्रियाँ थी। इनमें से दो पुत्रियों का विवाह मलिक नासिरूद्दीन कुबाचा के साथ तथा एक का विवाह इल्तुतमिश के साथ किया।[22] इल्तुतमिश, ऐबक का दास था, जो एक योग्य व शक्तिशाली शासक था। वह निष्पक्ष न्याय तथा जनता के हित के कार्यों के लिए प्रयत्नशील रहता था। 1210 ई० में चौगान खेलते समय घोड़े से गिर जाने पर कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु हुई।[23]

कुतुबुद्दीन इल्तुतमिश को सुल्तान बनाना चाहता था लेकिन अमीरों व मलिकों के उपद्रवों को शान्त करने के लिए आरामशाह को शासक बनाया गया।

1.खुदावन्देय जहाँशाह तुर्कान–

सल्तनतकाल में अधिकांशतः कुलीन वर्ग की महिलाऐं राजनीति में दिलचस्पी लेती थी। सल्तनतकाल में भी राजनीति में सक्रिय रहने वाली राजघराने की प्रथम महिला के रूप में 'खुदावन्देय जहाँशाह तुर्कान' का नाम आता है। शाहतुर्कान एक तुर्क दासी थी तथा इल्तुतमिश की पत्नी व रनिवास की पटरानी थी।[24] वह उच्च महत्त्वाकांक्षी महिला थी। वह मलिकों, आमिलों, सैय्यदों तथा धर्मनिष्ठ लोगों को अनेक उपहार दान आदि भेंट किया करती थी।[25] शाहतुर्कान अपने पुत्र रूक्नुद्दीन को सुल्तान बनाना चाहती थी इसलिए उसने राजनीतिक व्यवस्था में हस्तक्षेप करना प्रारम्भ कर दिया। 1236 ई० में इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद उसने अपने पुत्र रूक्नुद्दीन फीरोजशाह को सुल्तान बनाने के लिए षड़यंत्र किया उसे पूर्ण राजनीतिक अधिकार दिलवाने के प्रयत्न किए। उसने स्वयं के आज्ञापत्र देना प्रारम्भ कर दिया।[26] वह रनिवास की अन्य स्त्रियों से ईर्ष्या व द्वेष करती थी। कई स्त्रियों पर अत्याचार किए एवं अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनेक महिलाओं को मरवा डाला।[27] राज्य के अधिकारियों में सुल्तान व उसकी माँ के प्रति विरोध उत्पन्न हो गया।[28] नवम्बर 1236 ई० में इल्तुतमिश की बड़ी पुत्री रजिया ने शाहतुर्कान का विरोध प्रारम्भ कर दिया।[29] रूक्नुद्दीन की माता रजिया को बन्दी बना कर मरवा देने का षड़यंत्र रचने लगी। इस पर देहली निवासियों ने राजभवन पर आक्रमण कर रूक्नुद्दीन की माता को बन्दी बना लिया।[30]

2.रजिया –

सल्तनतकालीन राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने वाली महिलाओं में प्रमुख नाम रजिया का मिलता है। रजिया बुद्धिमान, प्रजापालक, दानी, न्यायप्रिय तथा आलिमों का आदर–सम्मान करती, वह युद्धकला में निपुण थी। वह अपने पिता सुल्तान इल्तुतमिश के समय में राज्य व्यवस्था के कार्यों भाग लेती थी। रजिया की माता सुल्तान इल्तुतमिश की सभी स्त्रियों में सर्वश्रेष्ठ थी[31] तथा कूशके फीरोजी[32] पर राज्य करती थी। रजिया के योग्य गुणों से प्रभावित होकर सुल्तान इल्तुतमिश ने ग्वालियर विजय अभियान से लौटने के पश्चात् मुंसरिफ मलिक ताज–उल–मुल्क महमूद को रजिया के उत्तराधिकारी नियुक्त किए जाने का फरमान लिखने का आदेश दिया।[33] फरमान लिखते समय सुल्तान के विश्वासपात्रों ने उससे कहा कि–''बादशाह इस्लाम, बड़े–बड़े पुत्रों की उपस्थिति में, जो कि राज्य के योग्य है किस कारण और क्या देखकर पुत्री को बादशाह बना रहे है इस समस्या का समाधान किया जाए तो उचित है, क्योंकि सेवकों की समझ में यह बात नहीं आती।''[34] सुल्तान इल्तुतमिश ने उत्तर दिया कि मेरे पुत्र भोग विलास में व्यस्त रहते हैं और कोई भी राज्य व्यवस्था के लिए योग्य नहीं है।[35] रूक्नुद्दीन फीरोजशाह की राजनीतिक

अव्यवस्था के मद्देनजर दिल्ली की जनता और हश्म–ए–कल्ब[36] ने रजिया के राज्यारोहण को समर्थन किया। जब रजिया राज सिंहासन पर आसीन हुई तो सभी कार्य पूर्व की भाँति अपने नियमानुसार होने लगे[37] लेकिन राज्य के वजीर निजाम–उल–मुल्क–मुहम्मद जुनैदी ने उसे स्वीकार नहीं किया। धीरे–धीरे मलिक वर्ग उसके विरोध में खड़ा हो गया। विरोध के समाप्त होने के लिए रजिया ने या तो उन्हें बन्दी बनाया या उनकी हत्या कर दी।[38] इसी दौरान रजिया सुल्तान ने स्त्रियों के वस्त्र व पर्दा त्याग कर कबा[39] व कुलाह[40] धारण किए तथा हाथी पर सवार होकर प्रजा को दर्शन देने लगी।[41] लाहौर व तबरहिन्द के मुक्ता मलिक इज्जुद्दीन कबीर खाँ तथा मलिक अल्तुनिया ने रजिया के विरोध में विद्रोह कर दिया। 1239 ई० में रजिया ने लाहौर पर चढ़ाई की और सन्धि के माध्यम से विद्रोह शान्त किया। 1240 ई० में रजिया अपनी केन्द्रीय सेना के साथ अल्तुनिया से मुकाबला करने के लिए तबरहिन्द की ओर रवाना हुई। सुल्तान रजिया को बन्दी बनाकर तबरहिन्द के किले में नजरबन्द कर दिया।[42] रजिया से अल्तुनिया ने विवाह कर देहली पर पुनः चढ़ाई की।[43] सुल्तान मुइजुद्दीन बहरामशाह की सेना ने रजिया व अल्तुनिया की सेना को पराजित किया। रजिया व अल्तुनिया भाग कर कैथल पहुँचे तो हिन्दुओं ने उन्हें बन्दी बना लिया और मार डाला।[44] 1236 ई०–1240 ई० तक तुर्क अमीरों व मलिकों का वैमनस्य तथा राजनीतिक उथल–पुथल चलता रहा। सुल्तान रजिया ने संघर्षपूर्ण चार वर्षों में राज्य सम्बन्धी सभी कार्य एक शासक के रूप में बखूबी निभाये। उसके शासन की अवधि 3 वर्ष 6 माह 6 दिन थी।[45]

दिल्ली की जनता व पूर्व राजनीतिक समर्थन से एक महिला का शासक बनना दिल्ली सल्तनत के लिए एक इतिहास बन गया किन्तु अचरज की बात है कि राजनीतिक दक्षता, कूटनीतिज्ञ, दूरदर्शी तथा अनेक योग्यताओं से परिपूर्ण होने के बावजूद रजिया एक शासिका के रूप में सफल नहीं हो सकी। रजिया की असफलता का मुख्य कारण उसके राज–अधिकारियों द्वारा विरोध करना था। किसी भी वर्ग ने अर्थात् न तो अमीर वर्ग, न मलिक वर्ग, न सामन्त वर्ग और न ही उलेमा वर्ग ने उसे सुल्तान के रूप में स्वीकार नहीं किया। तबकात–ए–नासिरी में रजिया के असफल होने का कारण उसका स्त्री होना माना है।[46]

3.मलिका –ए–जहाँ जलालुद्दनियाँ –

1246ई० में नासिरूद्दीन महमूद दिल्ली सल्तनत का सुल्तान बना। उसकी माता मलिका–ए–जहाँ जलालुद्दनियाँ वद्दीन की राजनीति में अधिक भूमिका नहीं थी लेकिन वह पुत्र नासिरूद्दीन द्वारा बहराइच में किए गए धर्म युद्धों में साथ गई थी।[47] बहराइच के धर्म–युद्ध तथा प्रगति की सूचना सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में

फैल गई। देहली राज्य के अमीर व मलिकों ने सुल्तान अलाउद्दीन से भयभीत होने के कारण सुल्तान नासिरूद्दीन महमूद को शीघ्र देहली आने की गुप्त सूचना दी। मलिका–ए– जहाँ ने एक अच्छा उपाय अपनाते हुए, लोगों को इस बात की प्रतिनिधित्व किया उसका पुत्र बीमारी के लिए दवा लेने और उपचार कराने के उद्देश्य से दिल्ली शहर जा रहा है और उसने सुल्तान को पालकी में बैठाकर पैदल घरेलु लोगों तथा घोड़ों की बड़ी संख्या के साथ बहराइच से राजधानी दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान के चेहरे को घूँघट से ढ़ककर घोड़े पर बिठाया और शीघ्र ही देहली पहुँच गए लेकिन जब तक बादशाह सिंहासनारूढ़ नहीं हुए तब तक उनके देहली पहुँचने की सूचना किसी को नहीं थी।[48] इस प्रकार मलिका–ए–जहाँ, सुल्तान को बहराइच से देहली सुरक्षित पहुँचाने में सफल रही। नासिरूद्दीन ने अपने शासन काल के चौथे वर्ष में उलुग खाँ को नायब–ए–मुमलिकात के पद पर नियुक्त किया[49] तथा उसी दिन सुल्तान से उलूग खाँ की पुत्री से निकाह किया।[50]

4.मलिका–ए–जहाँ–

लम्बे समय के अन्तराल के पश्चात् सल्तनत में राज–काज में भाग लेने वाली महिलाओं में मलिका–ए–जहाँ[51] का नाम सामने आया। मलिका– ए–जहाँ, जलालुद्दीन खिलजी की पत्नी, अलाउद्दीन खिलजी की सास व रूक्नुद्दीन इब्राहिम की माता थी। जलालुद्दीन खिलजी ने अपनी पुत्री का विवाह अलाउद्दीन से किया। अलाउद्दीन की सास व पत्नी प्रत्येक कार्य में हस्तक्षेप करती थी। अलाउद्दीन उन दोनों से इतना भयभीत रहता था कि उसने राजधानी छोड़ने का फैसला किया और कड़ा का गवर्नर बन राजधानी से दूर चला गया।[52] जलालुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त मलिका–ए–जहाँ ने राजगद्दी प्राप्त करने की तीव्र इच्छा के कारण बिना सोचे समझे योग्य सरदारों के परामर्श के बिना ही अपने छोटे पुत्र रूक्नुद्दीन इब्राहिम को राजसिंहासन पर बिठा दिया और राज–व्यवस्था को सुचारू कर स्वयं शाही फ़रमान जारी करने लगी।[53] उसने अपने बड़े पुत्र अर्कली खाँ को भी मुल्तान से नहीं बुलाया, माता के दोहरे व्यवहार से अर्कली खाँ बहुत दुःखी हुआ और देहली शहर कभी नहीं आया। माता व पुत्र के रिश्ते के बीच की कड़वाहट का लाभ उठाकर अलाउद्दीन ने दिल्ली पर आक्रमण की योजना बनाई। अलाउद्दीन इब्राहिम भागकर अर्कली खाँ के पास मुल्तान भाग गए।[54] अब दिल्ली सल्तनत की सत्ता अलाउद्दीन खिलजी के हाथों में आ गई।

अलाउद्दीन खिलजी की कठोर व नियंत्रित शासन व्यवस्था के अंतर्गत स्त्रियों की राजनीति में हिस्सेदारी सम्भव नहीं थी। 1296 ई० में अलाउद्दीन खिलजी देवगिरी (मरहठा) पर आक्रमण के लिए रवाना हुआ। लाजौरा घाटी के निकट अलाउद्दीन की भिड़न्त स्वामीभक्त कन्हन से हुई। कन्हन की सेना में दो हिन्दू महिलाओं ने शेरनी की भाँति युद्ध किया।[55] उनके युद्ध को देखकर अलाउद्दीन ने देवगिरी आक्रमण से सम्बन्धित अपने अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि एक देश में जहाँ महिलाऐं हमारे सामने से नहीं हटती है, मुझे नहीं पता कि युद्ध के मैदान में पुरूष हमारे साथ क्या करेंगे।[56] अलाउद्दीन ने दृढ़ संकल्प के साथ देवगिरि (मरहठा) पर आक्रमण कर रामचन्द्रदेव की सेना को पराजित किया। युद्ध की क्षतिपूर्ति में धनराशि के अतिरिक्त रामचन्द्रदेव ने अपनी पुत्री सत्यापाली/जहतिपाली का विवाह अलाउद्दीन से कर दिया।[57] सुल्तान कुतुबुद्दीन मुबारकशाह रामचन्द्रदेव की पुत्री झत्यापली का ही पुत्र था।

1299 ई० में उलूग खाँ व नूसरत खाँ के नेतृत्व में अलाउद्दीन की बहुत बड़ी सेना ने गुजरात प्रदेश को तहस–नहस कर दिया। गुजरात के राजा रायकर्ण बघेला अपनी पुत्री देवलरानी को साथ लेकर देवगिरि रामदेव के पास चला गया। रायकर्ण की पत्नी कमला देवी को तुर्क अमीरों ने अलाउद्दीन के सामने पेश किया, सुल्तान ने उसे मलिका–ए–जहाँ बना लिया।[58] कमला देवी की दो पुत्रियाँ थी दोनों पुत्रियाँ रायकर्ण के साथ रह गई। एक पुत्री की मृत्यु हो गई और दूसरी पुत्री देवलरानी 6 महिने की थी। कमला देवी ने सुल्तान को अपनी पुत्री देवलरानी को अपने पास बुलाने का अनुरोध किया, इस कारण सुल्तान अलाउद्दीन ने पुनः देवगिरी पर आक्रमण किया।[59]

चित्तौड़ की रानी पद्मिनी को प्राप्त करने की इच्छा के वशीभूत होकर सुल्तान अलाउद्दीन ने 28 जनवरी 1303 ई० में चित्तौड़ पर आक्रमण करने का दृढ़ संकल्प किया।[60] जालौर अभियान में अलाउद्दीन खिलजी के एक सेना टुकड़ी की कमान उसकी दासी 'गुल–ए–बिहिश्त' ने सम्भाली।[61] उसने बहादूरी से लड़ाई लड़ी लेकिन अचानक एक बीमारी से उसकी मृत्यु हो गई। उसके पुत्र शाहीन ने युद्ध जारी रखा।[62] युद्ध के पश्चात् जालौर के शासक कान्हड़देव के पुत्र वीरमदेव अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में गया। वहाँ उसे अलाउद्दीन की शहजादी (पुत्री) ने देख लिया और उसी से विवाह करने की ठान ली। शहजादी की इच्छा पूर्ति के लिए अलाउद्दीन को पुनः संवत् 1368 (सन् 1311ई०) में जालौर पर आक्रमण करना पड़ा। इस युद्ध में वीरमदेव मारा गया।[63]

इन सबके बावजूद अलाउद्दीन के शासनकाल में किसी स्त्री को कोई मौका नहीं मिला कि वे अपनी योग्यता व प्रतिभा को प्रदर्शित कर सकें क्योंकि अलाउद्दीन खिलजी स्वयं उच्च महत्त्वाकांक्षी के साथ–साथ शक्तिशाली व प्रतिभाशाली था।[64]

5.मखदूम–ए–जहाँ–

यह मुहम्मद तुगलक की माता थी। मुहम्मद बिन तुगलक अपनी माता मखदूम–ए–जहाँ[65] का बहुत आदर सम्मान करता था। सुल्तान मुहम्मद तुगलक दीपालपुर के राय रानामल भट्टी की पुत्री से विवाह करना चाहते थे। इस कारण सुल्तान ने रानामल भट्टी तिलोंदी में पहुँच कर उससे वार्षिक नकद कर माँगा। रानामल की परेशानी को दूर करने के लिए उसकी पुत्री ने सुल्तान से विवाह करने की सहमति दे दी। रानामल ने उसका नाम 'बीबी नाएला' तथा सुल्तान ने 'बीबी कादबानो' रख दिया।[66] इसी के पुत्र का नाम फीरोजशाह तुगलक था। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु के बाद उसकी बड़ी बहन 'खुदाबन्द जादा' अपने पुत्र दावर मलिक को सल्तनत का सुल्तान बनाना चाहती थी लेकिन वह इस कार्य को सिद्ध न कर सकी क्योंकि मलिकों व अमीरों ने उसका साथ नहीं दिया, वे फीरोजशाह तुगलक की बादशाह बनाना चाहते थे।[67]

तुगलक वंश के पतन के बाद सैय्यद वंश का शासन रहा लेकिन इनके शासनकाल में कोई प्रभावशाली महिला नहीं थी। लोदी काल में स्त्रियों की समकालीन राजनीति में सक्रिय भूमिका रही। जौनपुर की शर्की महिलाओं ने बहलोल लोदी व शर्की राज्य के मध्य राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप किया। जौनपुर के सुल्तान महमूद शर्की की पत्नी 'बीबी राजी' बदायूँ के अलाउद्दीन की पुत्री थी। उसने महमूद शर्की को बहलोल लोदी पर आक्रमण करने के लिए उकसाया।[68] सुल्तान मुहम्मद शर्की ने बहुत बड़ी सेना के साथ दिल्ली को घेर लिया, उन दिनों बहलोल लोदी सरहिन्द में था। बहलोल के ज्येष्ठ पुत्र ख्वाजा बायजीद तथा इस्लाम खाँ की पत्नी बीबी मत्तू सहित अफगान अमीर देहली के किले में बन्द हो गए। बीबी मत्तू कुछ स्त्रियों को पुरूषों के वस्त्र पहनाकर किले की रक्षा करती थी।[69]

6.बीबी राजी–

मुहम्मदशाह शर्की की माँ बीबी रत्तजी बुद्धिमान महिला थी।[70]शर्की की मौत के बाद बीबी राजी ने अमीरों के सहयोग से राजकुमार भीखन को सिंहासनारूढ़ कर बहलोल लोदी के साथ जमीनी विवाद को

समाप्त किया।[71] भीखन की मृत्यु के बाद हुसैन शाह शर्की को जौनपुर की सत्ता देने वाली भी बीबी राजी ही थी।

7.बीबी खुन्दा–

शर्की राजवंश के अन्तिम शासक हुसैन शाह की पटरानी बीबी खुन्दा दरबार में पर्दे के पीछे बैठकर राजनीति में हिस्सा लेती थी।[72] उसने अपने पति को बहलोल लोदी के खिलाफ भड़का कर देहली पर आक्रमण करने के लिए तैयार किया। मलिक शम्स हुसैन नाराज होकर दरबार से उठकर चला गया क्योंकि शर्की सुल्तान केवल बीबी खुन्दा की ही मानता था। अन्ततोगत्वा देहली के युद्ध में पराजित हुए और बीबी खुन्दा को अफगानों ने बन्दी बना लिया।[73]

8. शम्स खातून–

बहलोल लोदी की पत्नी शम्स खातून जो कुतुब खाँ की बहन भी थी, ने बहलोल लोदी को सन्देश भेजा कि जब तक कुतुब खाँ जौनपुर बन्दीगृह में है तब तक सुल्तान की नींद हराम है।[74] सिकन्दर लोदी की माँ, सुल्तान बहलोल लोदी की हिन्दू रानी 'बीबी अम्बा' ने अमीर राजदरबारियों की मदद से अपने पुत्र को राजसिंहासन पर बैठाया तथा राजकाज का संचालन स्वयं करती थी।[75]

9.रामप्यारी गुर्जरी–

नासिरुद्दीन तुगलक के शासनकाल में सन् 1398 ई० में तैमूर लंग ने दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों पर आक्रमण किया। सहारनपुर में तैमूर की सेना का सामना रामप्यारी चौहान गुर्जर के नेतृत्व में 40,000 युवा महिला सैनिकों ने किया। इस युद्ध में तैमूर बुरी तरह घायल हुआ और कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई।[76]

सन्दर्भ–

1 श्रीवास्तव, ए०एल०, दिल्ली सल्तनत, पृ० 18
2 ओक, पी०एन०, भारत में मुस्लिम सुल्तान, भाग–1 पृ० 45
3 इलियट एण्ड डाउसन, हिस्ट्री ऑफ इंडिया, खण्ड–2,उद्धृत प्रसाद, ईश्वरी, मध्ययुग का इतिहास, पृ० 98
4 ओक, पी०एन०, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ० 45
5 ओक, पी०एन०, भारत में मुस्लिम सुल्तान, भाग–1, पृ० 51

[6] वही
[7] श्रीवास्तव, ए०एल०, दिल्ली सल्तनत, पृ० 26
[8] तबकात–ए–नासिरी (रिवर्टी), भाग–1, पृ० 70
[9] मुन्तख़ब–उत–तवारीख़, भाग–1, पृ० 99
[10] मुन्तख़ब–उत–तवारीख़, भाग–1, पृ० 100
[11] प्रसाद, ईश्वरी, मध्य युग का इतिहास, पृ० 74
[12] वही, पृ० 28
[13] मुन्तख़ब–उत–तवारीख़, भाग–1, पृ० 106
[14] उद्धृत प्रसाद, ईश्वरी, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ० 74
[15] मुन्तख़ब–उत–तवारीख, भाग–1, पृ० 123
[16] मुन्तख़ब–उत–तवारीख, भाग–1, पृ० 123
[17] नाईकी देवी परमर्दि राजवंश के राजा शिवचित्ता परमर्दिदेव की पुत्री
[18] शास्त्री, विजय सोनकर, हिन्दू वाल्मीकि जाति, पृ० 110
[19] श्रीवास्तव, ए०एल०, भारत का इतिहास, पृ० 30
[20] वही, पृ० 30–38
[21] प्रसाद, ईश्वरी, मध्ययुग का इतिहास, पृ० 143
[22] मुन्तख़ब–उत–तवारीख, भाग–1, पृ० 135
[23] तबकात–ए–नासिरी, आदि तुर्ककालीन भारत, पृ० 8
[24] तबकात–ए–नासिरी, आदि तुर्ककालीन भारत, पृ० 31
[25] वही
[26] वही; तबकात–ए–नासिरी, (रिवर्टी), पृ० 632
[27] वही, पृ० 32
[28] वही
[29] वही, पृ० 184
[30] वही
[31] तबकात–ए–नासिरी, आदि तुर्ककालीन भारत, पृ० 33
[32] कूशके फीरोजी–राजभवन का नाम
[33] तबकात–ए–नासिरी, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ० 33; तबकात–ए–नासिरी, (रिवर्टी), पृ० 638
[34] वही, पृ० 185; पृ० 639
[35] वही
[36] हश्म–ए–कल्ब –दिल्ली की केन्द्रीय सेना
[37] तबकात–ए–नासिरी, (रिवर्टी), पृ० 639
[38] तबकात–ए–नासिरी (रिवर्टी), पृ० 639
[39] कबा–सब वस्त्रों के ऊपर पहनी जाती
[40] कुलाह–पगड़ी के साथ पहनने वाली टोपी
[41] तबकात–ए–नासिरी, आदि तुर्ककालीन भारत, पृ० 35
[42] मुन्तखब़–उत–तवारीख़, भाग–1, पृ० 141
[43] वही, पृ० 36

[44] वही
[45] तबकात–ए–नासिरी (रिवर्टी), पृ० 648
[46] तबकात–ए–नासिरी, आदि तुर्ककालीन भारत, पृ० 33
[47] वही, पृ० 46
[48] तबकात–ए–नासिरी (रिवर्टी), पृ० 676–677
[49] श्रीवास्तव, ए०एल०, भारत का इतिहास, पृ० 67
[50] मुन्तखब़–उत–तवारीख़, भाग–1, पृ० 145
[51] तारीख़–ए–फीरोजशाही(बरनी), ख़िलजी कालीन भारत, पृ० 14
[52] वही, पृ० 30
[53] तारीख़–ए–फीरोजशाही(बरनी), ख़िलजी कालीन भारत, पृ० 39
[54] वही, पृ० 39–40
[55] लाल, के०एस०, हिस्ट्री ऑफ ख़लजीज, पृ. 54
[56] वही
[57] वही, पृ० 57
[58] देवलरानी खिज्र खाँ, खिलजी कालीन भारत, पृ० 171
[59] वही
[60] पदमावत्, बादशाह चढ़ाई खण्ड, पृ० 406
[61] तारीख़–ए–फ़रिश्ता, पृ० 118
[62] वही, पृ० 118–119
[63] नैणसी री ख्यात, खण्ड–2, पृ० 165
[64] लाल, के०एस०, हिस्ट्री ऑफ ख़लजीज, पृ० 307
[65] रेहला, तुगलक कालीन भारत, खण्ड–1, पृ० 234
[66] वही, पृ० 54
[67] तारीख़–ए–फीरोजशाही (अफीक), तुगलक कालीन भारत, खण्ड–2, पृ० 56
[68] तारीख़–ए–दाऊदी, उत्तर तैमूरकालीन, भाग–1, पृ० 246
[69] वही, पृ० 247
[70] तबकात–ए–अकबरी, उत्तर तैमूरकालीन, भाग–1, पृ० 205
[71] वही, पृ० 342
[72] वाकेआत–ए–मुश्ताकी, उत्तर तैमूरकालीन, भाग–1, पृ० 99
[73] वही
[74] तारीख़–ए–दाऊदी, उत्तर तैमूरकालीन, भाग–1, पृ० 249
[75] तारीख़–ए–फ़रिश्ता, वही, पृ० 563
[76] http://historyinhindi.in/rampyari-gurjar-history-in-hindi/